समाजशास्त्र की विषय-वस्तु
Subject Matter of Sociology

स्वरूपात्मक तथा समन्वयात्मक सम्प्रदाय के विचारों को समझ लेने के बाद सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि समाजशास्त्र की वास्तविक विषय-वस्तु क्या है? अर्थात समाजशास्त्र के अंतर्गत किन-किन विषयों का अध्ययन किया जाता है। आज अधिकांश विद्वान समाजशास्त्र को सम्पूर्ण समाज का एक सामान्य अध्ययन मानते हैं। इस प्रकार विद्वानों ने इसके विषय-वस्तु को कुछ भागों में बाँट दिया है। इनमें हम दुर्खीम, गिंसबर्ग, केरन्स के विचारों की सहायता से समाजशास्त्र के विषय-वस्तु को स्पष्ट करेंगे।

Ⓐ दुर्खीम के विचार :-

दुर्खीम ने सामाजिक तथ्यों को समाजशास्त्र के अध्ययन की वास्तविक विषय-वस्तु माना है। इस दृष्टिकोण से आपने समाजशास्त्र के अध्ययन में सम्मिलित किये जाने वाले सभी सामाजिक तथ्यों को तीन भागों में विभाजित किया है।

1. सामाजिक स्वरूपशास्त्र (Social Morphology) —
इस भाग के अंतर्गत उन विषयों का अध्ययन किया जाता है जो सामाजिक जीवन के आकार अथवा स्वरूप के निर्माण में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। इस प्रकार भौगोलिक दशाएँ, सामाजिक जीवन पर उनका प्रभाव, जनसंख्या का घनत्व तथा उनका स्थानीय वितरण तथा जनसंख्या के गुण आदि समाजशास्त्र के विषय-वस्तु के अंतर्गत आते हैं।

2. सामाजिक शरीरशास्त्र (Social Physiology) :-
शरीरशास्त्र का तात्पर्य उन इकाईयों से है जो समाज रूपी शरीर का न केवल निर्माण करते हैं बल्कि अपने-2 कार्यों के द्वारा इसे व्यवस्थित भी बनाये रखते हैं। उदाहरण के लिए कानून, धर्म, भाषा, परिवार तथा नैतिकता आदि इसी तरह के विषय है। यह सभी भाग इतने महत्वपूर्ण है कि इनके द्वारा समाजशास्त्र की विभिन्न शाखाओं; जैसे धर्म का समाजशास्त्र अथवा परिवार का समाजशास्त्र आदि विकसित हो सकते हैं।

3. सामान्य समाजशास्त्र (General Sociology) :—
इस विभाग के अंतर्गत उन सामान्य सामाजिक नियमों के अध्ययन पर बल दिया गया है जो सामाजिक तथ्यों में विद्यमान होते है। सामाजिक जीवन की निरंतरता और स्थिरता को समझने के लिए भी इन सामान्य नियमों का अध्ययन करना आवश्यक है इसलिए इस विभाग को दुर्खीम ने 'सामान्य समाजशास्त्र' कहा।

(B) गिन्सबर्ग के विचार :
गिन्सबर्ग ने समाजशास्त्र की विषयवस्तु को चार प्रमुख भागों में विभाजित किया है :—

1. सामाजिक स्वरूपशास्त्र (Social Morphology) :—
इसके अंतर्गत जनसंख्या के आकार, गुण और घनत्व जो सामाजिक संरचना के निर्माण में योगदान देते है, का अध्ययन किया जाता है। इसके अतिरिक्त उन सभी सामाजिक समूहों, संस्थाओं और समितियों का अध्ययन किया जाता है जो सामाजिक संरचना का निर्माण करती है।

2. सामाजिक प्रक्रियाएँ (Social Processes) :—
गिन्सबर्ग के अनुसार सामाजिक प्रक्रियाओं का अर्थ व्यक्तियों के बीच पाए जाने वाले संबंधों के विभिन्न स्वरूपों से है। इस प्रकार समाजशास्त्र के अध्ययन में सहयोग, संघर्ष, अनुकूल, अनुकूलन, सात्मीकरण, समायोजन, प्रतिस्पर्धा तथा प्रभुत्व जैसी सामाजिक प्रक्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है।

3. सामाजिक नियंत्रण (Social Control) :—
गिन्सबर्ग के अनुसार समाजशास्त्र में उन विषयों को सम्मिलित किया जाता है जो समाज में व्यक्तियों के व्यवहारों को नियंत्रित एवं व्यवस्थित करते है। धर्म, प्रथा, परम्परा, नैतिकता, कानून, जनरीतियाँ तथा जनमत आदि इसी प्रकार के विषय है। इस दृष्टिकोण से यह सभी विषय समाजशास्त्र की विषय-वस्तु है।

4. सामाजिक व्याधिकी (Social Pathology) :—
इसके अंतर्गत उन तथ्यों का अध्ययन किया जाता है जो समाज को विघटित करने का काम करते है। इसमें बाल अपराध, बाल-अपराध, बेकारी,

(c) केरन्स के विचार :

केरन्स ने समाजशास्त्र में अध्ययन किये जाने वाले सभी विषयों को 6 भागों में विभाजित किया है :-

1. मानवीय क्रियाएँ (Human Actions) :- समाजशास्त्र में हम सभी सामाजिक और मानसिक क्रियाओं का अध्ययन करते हैं। यही क्रियाएँ सामाजिक संबंधों का वास्तविक आधार है।
2. सामाजिक संगठन (Social Organisation) :- इसके अंतर्गत उन सभी समूहों तथा संगठनों का अध्ययन किया जाता है जो सामाजिक ढाँचे का निर्माण करते हैं। परिवार, प्रजातीय समूह, जातिगत संगठन तथा विभिन्न सामाजिक समूह आदि इसी प्रकार के समूह है।
3. सामाजिक नियंत्रण (Social Control) :- इसके अंतर्गत वे सभी विषय सम्मिलित है जिनका अध्ययन मानव व्यवहारों पर नियंत्रण रखने से है। जैसे - धर्म, भाषा, परम्पराएं, जनरीतियाँ, प्रथा, कानून, नैतिकता, जनमत आदि।
4. सामाजिक परिवर्तन (Social Change) :- समाजशास्त्र में सामाजिक परिवर्तन तथा इसके कारकों का अध्ययन करना भी आवश्यक है। इस दृष्टिकोण से आर्थिक, प्रौद्योगिक, सांस्कृतिक, जैविकीय तथा राजनैतिक कारकों का अध्ययन समाज शास्त्र की विषय-वस्तु के अंतर्गत आता है।
5. सामाजिक संस्थाएँ (Social Institutions) :- प्रत्येक समाज का संचालन करने तथा उसे नियमित करने में विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा राजनैतिक संस्थाओं का विशेष योगदान होता है। इस प्रकार इन संस्थाओं का अध्ययन समाजशास्त्र की वास्तविक विषय-वस्तु से संबंधित है।
6. सामाजिक संहिताएँ (Social Codes) :- सामाजिक संहिताओं का तात्पर्य समाज के औपचारिक तथा लिखित नियमों से है जो वर्तमान जटिल समाजों के जीवन को नियमित बनाती है। ऐसी संहिताओं में राजनैतिक संहिताओं का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है जिसके आधार पर कानून का समाजशास्त्र का विकास हुआ है। इस दृष्टिकोण से समाज शास्त्र सामाजिक संहिताओं के अध्ययन को भी महत्व देता है।

(d) मैक्स वेबर के विचार :

वेबर के अनुसार समाजशास्त्र की विषय वस्तु सामाजिक क्रियाएँ होनी चाहिए।